॥ श्री ब्रह्मा चालीसा ॥

जय जय कमलासन स्वामी

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री ब्रह्मा चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय गणपति सद्गुण सदन, कविवर बदन कृपाल ।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय कमलासन स्वामी ।
सब जग के अन्तर्यामी तुम ही जग के सृष्टिकर्ता ।
पालनकर्ता, संहर्ता चार वेद जिन मुख गाए ।
ज्ञान सुधा जग में बरसाए हंसवाहन सोहे भारी ।

कर कमण्डलु पुस्तक धारी श्वेत कमल आसन सुहावा ।
देखत रूप मनोहर भावा सरस्वती संग सदा विराजो ।
भक्तन के संकट सब भाजो सावित्री के प्रिय भगवान ।
करो सदा भक्तों कल्याण वेद पुराण तुम्हें यश गावें ।

देव मुनि सब शीश नवावें सृष्टि रचना हेतु अवतारे ।
ऋषि-मुनि सब ध्यान तुम्हारे भक्ति ज्ञान के दाता स्वामी ।
पूर्ण करो सबकी अभिलाषी जो जन तुम्हरी पूजा करता ।
सुख-सम्पत्ति से झोली भरता दीन दुखी के तुम हितकारी ।

करो कृपा हे जगत बिहारी चार मुखों से वेद बखाने ।
महिमा तेरी कौन बखाने ब्रह्मलोक के तुम अधिकारी ।
जग के पालन में हितकारी कमल नयन करुणा के सागर ।
भक्त जनों के तुम उद्धारक जो यह पाठ करे मन लाई ।

ता पर कृपा करें ब्रह्मराई विद्या बुद्धि धन सुख पावे ।
जीवन में यश मान बढ़ावे संकट कटे मिटे सब पीरा ।
जपे जो नाम तुम्हारा धीरा अन्त समय ब्रह्मलोक सिधारे ।
पावै मोक्ष न जन्म दुबारे ॥

॥ दोहा ॥

जो यह ब्रह्मा चालीसा, प्रेम सहित गावे ।
विद्या बुद्धि सुख सम्पदा, निश्चय ही पावे ॥

॥ इति श्री ब्रह्मा चालीसा सम्पूर्ण ॥